Daily Gospel Reflections in Hindi

10 August 2019

लूकस 14: 15-24

THOSE WHO EAT THE BREAD OF HEAVEN ARE BLESSED

सामाजिक जीवन में हमारा दायित्व होता है कि अगर हमें आमंत्रित किया जाये तो हम उसे स्वीकार करें और आयोजन में शामिल हो। अगर हम आयोजन की पूरी तैयारी कर चुके हों और आमंत्रित अतीथि ना आये तो यह मेजबान का अपमान होता है। आज के दृष्टांत में हम एक अपमानित मेजबान को देखते हैं जिस के यहाँ भोज की तैयारी होने के बाद कोई भी आमंत्रित मेहमान नहीं आता। अंततः मेजबान उन लोगों को एकत्र करता है जो कि आमंत्रित नहीं थे लेकिन उन्हें अंतिम क्षण में वह आनंद और पुरुस्कार प्राप्त होता है जिस की उन्होने कल्पना नहीं की थी। इशारा स्पष्ट है कि आमंत्रित लोग ईश्वर की चुनी हुई इस्राएली जनता थी जिन्हें पिता ईश्वर ने अन्य राष्ट्रों से चुनकर निकाला लेकिन उन्होनें ईश्वर के आमंत्रण को ठुकरा दिया और ईश्वर के राज्य के वरदान वंचित हो गए। लेकिन नाकेदार, वेश्या, पापी आदि पश्चाताप कर ईश्वर के राज्य के अधिकारी बन गए मत्ती 21:32। वर्तमान में हम " ख्रीस्तीय विश्वासी" चुनी हुई प्रजा हैं। ईश्वर के राज्य में भोजन के लिए आमंत्रित हैं लेकिन क्या हम ने उस आमंत्रण को स्वीकारा है? क्या हम भोज के लायक हैं या हम भी शारीरिक (मेरा विवाह हुआ है इसलिए नहीं आ सकता), भौतिक वस्तु (दो जोड़ी बैल) और नश्वर संपत्ति (खेत) का मोह जैसी चीजों को अधिक महत्व देकर ईश्वर के आमंत्रण को ठुकरा रहें हैं? कही हम अवसर ना खो दे कि कोई अन्य हमारे बदले भोज में शामिल हो जाए और हम बाहर ही रह जायें।

Rev. Fr. Anil Francis

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019